

बालगीत

निधी चौधरी, IAS

बालगीत

84 बाल कविताओं का संग्रह

निधि चौधरी

IAS



बालगीत

निधि चौधरी IAS

प्रकाशक

सौ. कुमुदिनी सिद्धेश्वर घुले,

सप्तर्षी प्रकाशन,

गट नं. ८४/२, दामाजी कॉलेज पाठीमागे,

मंगळवेढा, जि. सोलापूर-४१३३०५

मोबा. ९८२२७०१६५७ / 9804047077

Email:

saptarsheepublishing@gmail.com

Website: www.saptarshee.in

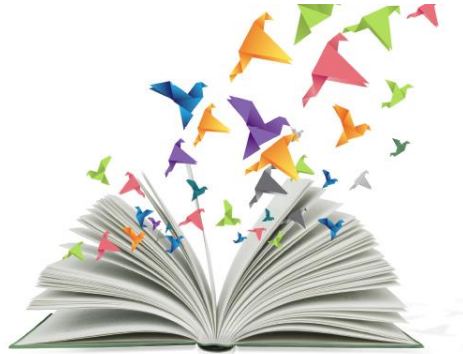
कवर

कृतिका DTP

प्रिंट

कृतिका प्रिंट

ISBN978-93-87939-36-3



अपने बेटों अद्विज और अद्विन के लिए सस्नेह

कविताक्रम

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	अखबार	7
2.	अप्रैल फूल	8
3.	आई दिवाली	9
4.	आई रे होली	10
5.	आएगी कल बहार	11
6.	आओ ईद मनाएं	12
7.	आम रसीले	13
8.	आया फिर नया साल	14
9.	उपहार	15
10.	उपवन	16
11.	उफ ये गर्मी	17
12.	ऊंट	18
13.	ऐसा नहीं एक भी राम	19
14.	कुत्ता	20
15.	कौआ और कोयल	21
16.	क्रिसमस आया	22
17.	गणतंत्र दिवस	23
18.	गर्मी की छुट्टियां	24
19.	गिलहरी	25
20.	गुड़िया रानी	26
21.	गुब्बारे	27
22.	घंटी	28
23.	घिर आए बादल	29
24.	चंदा मामा	30
25.	चिड़िया ओ चिड़िया	31
26.	चिड़ियाघर	32
27.	जन्मदिन	33

28.	टिक टिक घड़ी	34
29.	टीचर	35
30.	टीनू बेचारी	36
31.	ठंडी हवाएं	37
32.	डाकिया	38
33.	तपता सूरज बहे पसीना	39
34.	तारे	40
35.	तितली	41
36.	दीपों का त्यौहार	42
37.	दो पल और सही	43
38.	धन्य धरा ये भारती	44
39.	धूल	45
40.	नए साल का तोहफा	46
41.	नटखट बिल्ली	47
42.	नदिया रे नदिया	48
43.	नन्हा दीया	49
44.	नानी	50
45.	निंदिया रानी	51
46.	पतंग	52
47.	पतझड़	53
48.	परियों की रानी	54
49.	परीक्षाओं का मौसम	55
50.	पेड़	56
51.	पौधे	57
52.	फागुन का त्यौहार	58
53.	फौजी का अरमान	59
54.	बचपन	60
55.	बरसा पानी	61
56.	बस्ता भारी	62
57.	बाल दिवस	63
58.	बिजली	64

59.	बुखार	65
60.	भगवान	66
61.	मकर संक्रांति	67
62.	मैं हूँ परियों की शहजादी	68
63.	रक्षाबंधन	69
64.	रावण एक न मर पाते	70
65.	रेल आई	71
66.	रेगिस्तान	72
67.	लौट आया बसंत	73
68.	वर्ष नया	74
69.	वर्षा रानी	75
70.	विद्यालय	76
71.	शाम	77
72.	सबसे अद्भुत हिन्दोस्तान	78
73.	समय	79
74.	सर्दी	80
75.	सलोन सपने	81
76.	सावन	82
77.	सैनिक	83
78.	सैलानी	84
79.	सोनू के विषय	85
80.	स्कूल बस	86
81.	हाथी	87
82.	होली का त्यौहार	88
83.	हंसते-हंसते दीप जले	89
84.	हंसना सीखो	90

1 . अखबार

सुबह-सुबह घर पर यह आए
दुनिया भर की खबरें लाए ।
चाय की चुस्की के संग
अखबार सबका मन बहलाए ॥
देश-विदेश की घटनाएं हैं,
खेल-कूद की खबरें सारी ।
मनोरंजन भी करे अखबार
जानकारी बढ़ाए हमारी ॥
शिक्षा का यह माध्यम है
जनमानस की है चेतना ।
अखबार क्रांति का वाहक है
जगाता सबमें संवेदना ॥
उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम
सब पर होता इसमें विचार ।
घर पर हो या दफ्तर में
लगता भला बहुत अखबार ॥



2. अप्रैल फूल

बिल्ली मौसी के घर जाकर
 बोला, चूहों का सरदार ।
 मौसी कल दावत है हमारे
 खाएंगे मिठाई और फल रसदार ।
 चूहे की बात सुनकर,
 मौसी का मुँह भर आया ।
 पहले दावत फिर चूहों को
 खाने का उसने प्लान बनाया ।
 अगले दिन सजधज कर मौसी
 निकली अपने घर से ।
 चूहों के घर पहुंची तो
 नौ घट आंसु बरसे ।
 लिखा हुआ था सबके घर पर
 दावत चाहिए “अप्रैल फूल” पर ।
 आज “मूर्ख दिवस” है आया
 गुस्सा न हो, जो अप्रैल फूल बनाया



3. आयी दिवाली

घर-घर सज़ा हुआ दुल्हन सा
हर आँगन में छाई खुशहाली ।

सबने है नवरूप धरा

लो आई फिर से दिवाली ।

दीपों की ये झिलमिल कतारें

देकर के ललकार पुकारे ।

हम धरती के नन्हे तारे

रोशन कर दें रात ये काली ।

फूट रहे बम और पटाखे

कहते करके तेज धमाके

चंदा को अपने में छिपा के

मत इतराओ निशा निराली ।

मां लक्ष्मी की हो कृपा अपार,

बढ़े खुशहाली, आपस में प्यार,

सुख-सम्पन्न हो संसार,

राष्ट्र बने अब वैभवशाली ॥



4 . आई रे होली

आई रे, आई रे होली
उड़ने लगा गुलाल और रंग ।
झूमे नाचे है जग सारा
बजने लगे ढोल और चंग ।
लाल, गुलाबी, नीला, पीला
सतरंगी सबका चेहरा ।
परवान चढ़ी उमंगें सबकी
दिल में प्यार बढ़ा गहरा ।
मस्तों की टोली निकली
पीकर के भोले की भंग ।
आई रे, आई रे होली
उड़ने लगा गुलाल और रंग ।
बच्चों ने छोड़ी पिचकारी
फूट पड़ा रंग का फव्वारा ।
फागुन में बिन बारिश के
भीगा हुआ है तन सारा ।
वैरभाव सब भूल गए हैं
अपनेपन की उठी तरंग ।
आई रे, आई रे होली
उड़ने लगा गुलाल और रंग ॥

5. आएगी कल बहार

पेड़ों से पते झरे
 सूख गई हर डाली ।
 दूर-दूर तक कहीं नहीं
 दिखती है हरियाली ।
 सूखे वन, सूखे जंगल
 खेत पड़े हैं खाली ।
 पशु-पक्षी बेहाल हैं सब
 ताल-तलैया खाली खाली ।
 सरर-सरर कर चली हवाएं
 आँधी ने भी तान निकाली ।
 रीता है अम्बर का आँगन
 सूनी है धरती की थाली ।
 नूर कुदरत का छीन लिया
 पतझड़ तेरी अदा निराली ।
 आएगी कल बहार मगर



छाएगी फिर से खुशहाली ॥

6. आओ ईद मनाएँ

आओ मिलकर ईद मनाएँ,
भाईचारा सब ओर बढ़ाएं ।
हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई
सब मिलकर ईद मनाएँ ।



भारत के बच्चे सब सारे,
 सिवईयों का स्वाद उड़ाए ।
 रमजान का पाक महीना ये,
 शहादत का सबको पाठ पढ़ाए ।
 ईदगाह में हुई अजान,
 छोटा-बड़ा सब गले मिल जाए ।
 ऊँच-नीच का भेद नहीं है,
 ईद समानता की सीख सिखाए ।
 आओ मिलकर ईद मनाएं,
 भाईचारा सब ओर बढ़ाएँ ॥

7. आम रसीले

फलों का राजा है कहलाता
आम सभी के मन को भाता ।
बच्चा हो या हो कोई बूढ़ा
सबका मन इसको ललचाता ॥
हापुस, लंगड़ा और दशहरी
आम की कितनी किस्में आए ।
फजरी हो या तोतापुरी
माल्दा, अल्फांसो भी सबको भाए ॥
आम रसीले मीठे-मीठे,
मूंह में पानी भर जाता ।
स्वाद है इसका इतना अच्छा
खाकर मजा बहुत आता ॥
फल तो और भी होते लेकिन
आम सबमें खास कहलाता ।
फलों का राजा है यह
हर किसी के मन को भाता ॥



8. आया फिर नया साल

नई-नई सी किरणें फूटी
 ताजा-ताजा सूरज निकला ।
 झरने की कलकल ने भी
 कुछ-कुछ अपने स्वर को बदला ।
 पत्ते-पत्ते शाख-शाख पर
 शबनम ने डाला पहरा ।
 मौसम ने मिज़ाज बदला
 मुस्काया सागर गहरा ।
 बादल भी हंसते जाते
 गुनगुनाती चले हवा ।
 खिला-खिला ये आसमां
 पंछियों के संग उड़ा ।
 कली-कली पर छाया नूर
 गुलशन-गुलशन है खुशहाल ।
 खुशी-खुशी सबसे मिलने
 आया है फिर नया साल ॥



9. उपहार

पिंकी चूहिया चिंकू हाथी से बोली

भैया कल रक्षाबंधन है ।

यह त्यौहार प्रेम और स्नेह का

रिश्ता ये सबसे पावन है ॥

इतना तुम सुन लो भैया

दोगे इक ऐसा उपहार ।

जो इतना विशाल, विस्तृत हो

न हो कोई आकार-प्रकार ॥

अगले दिन फिर चिंकू आया

पिंकी से राखी बंधवाई ।

माथे पर तिलक लगवाकर

बहिना ने मिठाई खिलाई ॥

फिर बोला, पिंकी से बहिना

क्या लेना न चाहोगी उपहार ।

जिसकी न कोई सीमा हो

हो अनन्त जिसका विस्तार ॥

बोला बहिना असीम अनन्त

और विस्तृत है भाई का प्यार ।

बहिना को गले से लगाया

बह निकली फिर अश्रुधार ॥



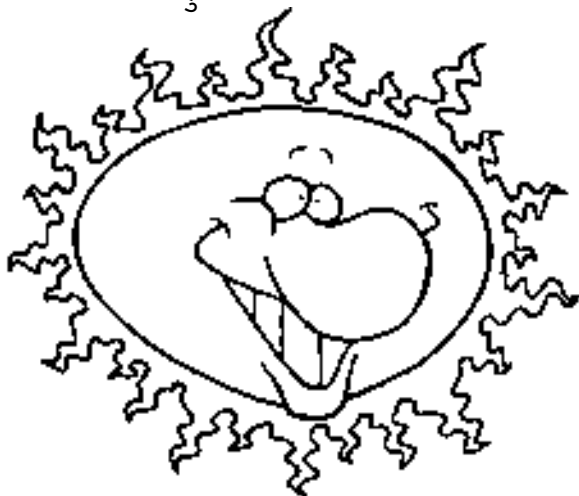
10. उपवन

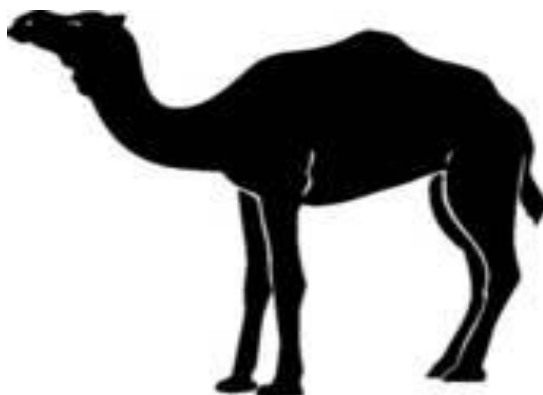
कितना सुन्दर मेरा उपवन
लगता है प्यारा सा मधुवन
गुलाब चमेली से महके
तुलसी से हो जाए पावन ।
रात की रानी लगती प्यारी
गेंदे की महके क्यारी
रंग-बिरंगी तितलियां आए
चिड़ियां चहके न्यारी न्यारी ।
ठंडी-ठंडी हवा बहे
सुवासित है घर का आँगन
कितना प्यारा मेरा उपवन
लगता है प्यारा सा मधुवन ।
वृक्ष लगे हैं हरे-भरे
छाया जिनकी मनभाए
नन्हीं-नन्हीं खिली कलियां
झूम रही हैं हरी लताएं ।
हरियाली चूनर ओढ़े
सुरभित है सारा गुलशन
कितना प्यारा मेरा उपवन



11. उफ ये गर्मी

उफ! ये गर्मी बहुत सताए
 हरपल पानी की प्यास जगाए
 सुबह-शाम ही लगते अच्छे
 दोपहर किसी को नहीं सुहाए ।
 पशु-पक्षी भी आस लगाए
 आसमान की ओर निहारे
 मई-जून के महीनों में
 लू का डर सबको सताए ।
 सूरज आग की बारिश करता,
 बादल, बिन बारिश के जाए ।
 बच्चे-बूढ़े सब यह सोचें
 सावन की घड़ी जल्दी आए ।
 सूखे कुएं, सूखी नदियां
 बिन बरखा सूखी रह जाए
 धरती की थाली है खाली
 उफ! ये गर्मी बहुत सताए ॥





12. ऊंट

रेत के टीले ऊंचे-ऊंचे
दूर-दूर तक रेगिस्तान ।
न सड़क, न रेल यहां पर
न वाहनों का कोई निशान ॥
ऊंट यहां की जीवनरेखा
रेगिस्तान का यही जहाज ।
कम पानी में है जी लेता
करता सब लोगों के काज ॥
कूबड़ ऊंची-नीची इसकी
पानी का रखती भंडार ।
चुपचाप जुगाली करता यह
रेगिस्तान का है आधार ॥

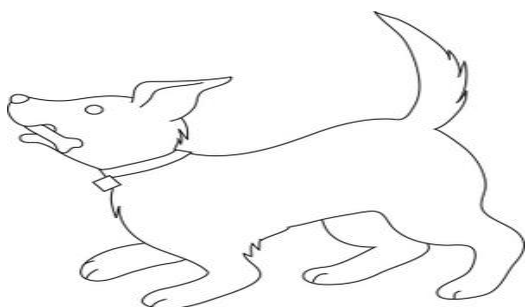
13. ओ सरहद के प्रहरी

तुमको मेरा कोटि-कोटि नमन
 ओ सरहद के प्रहरी ।
 तूने लिया राष्ट्र की रक्षा का वचन
 ओ सरहद के प्रहरी ।
 देश की सुरक्षा हेतु
 थामा मृत्यु का दामन ।
 प्राणों की परवाह न की
 ताकि खुश रहे ये वतन ।
 इस देश के कृष्ण-राम
 तुम्हारा हम करते वन्दन ।
 तुमको मेरा कोटि-कोटि नमन
 ओ सरहद के प्रहरी ।
 करगिल हो या द्रास बटालिक
 दुश्मन का किया दमन ।
 सांसों में तेरे भारत की खूशबू,
 भारत ही तेरी है धड़कन ।
 एक अरब जन साथ तुम्हारे
 करते सदैव अभिनन्दन ।
 तुमको मेरा कोटि-कोटि नमन
 ओ सरहद के प्रहरी ॥



14. कुत्ता

मेरा टॉमी सबसे प्यारा
घर की करता वो रखवाली ।
रंग है उसका काला
लेकिन उसकी अदा निराली ॥
भौं-भौं करके वो पुकारता
जब भी कोई अजनबी आए ।
पार्क में जाकर खेले जब
हम बच्चों के मन को भाए ॥
हरपल मेरे संग रहे वो
बनकर मेरा हमसाया ।
वफादारी की मिसाल है वो



उसमें मैंने सच्चा दोस्त पाया ॥

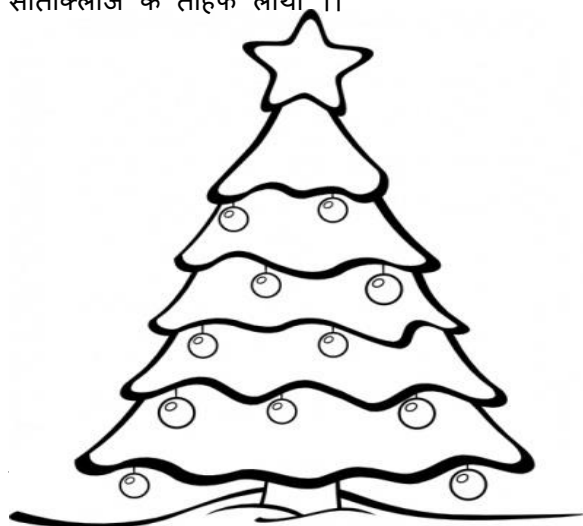
15. कौआ और कोयल

कौआ कांव-कांव जब करता
 कर्कश वाणी सही न जाए ।
 काली कोयल बड़ी सुरीली
 कूहू-कूहू कर मन बहलाए ॥
 दोनों का है रूप सांवला
 पर गुणों में है अंतर भारी ।
 एक है कड़वा, कर्कश बोले
 दूजे की मिठास लगे मनुहारी ॥
 कौए के दहरी पर बैठने से
 घर पर आते हैं मेहमान ।
 कोयल के संगीत से
 कलियों पर खिलती मुस्कान ॥
 कौए कहलाते पितर हमारे
 श्राद्ध पर लोग इन्हें खिलाएं ।
 कोयल कौए के घोंसलों में
 अंडे अपने देकर जाए ॥
 कौआ तेज चतुर बहुत है
 कोयल होती बहुत ही भोली ।
 दोनों का रूप है एक समान
 पर अलग दोनों की बोली ॥



16. क्रिसमस आया

क्रिसमस आया क्रिसमस आया
सांता क्लॉज के तोहफे लाया ।
यीसू मसीह के जन्मदिवस को
सबने मिलकर खूब मनाया ॥
बच्चों के मन में खुशियां दौड़ी,
केक, कुकीज खूब खाया ।
क्रिसमस आया, क्रिसमस आया
सांता क्लॉज के तोहफे लाया ॥
चर्च में जाकर सबने
ईसू से का आशीष पाया ।
क्रिसमस आया, क्रिसमस आया
सांता क्लॉज के तोहफे लाया ॥
धरती के सब बच्चों पर
मां मरियम ने प्यार बरसाया ।
क्रिसमस आया, क्रिसमस आया
सांताक्लॉज के तोहफे लाया ॥



17. गणतंत्र दिवस

गणतंत्र हमको याद दिलाता

जनता राष्ट्र की प्रहरी है ।

जन-गण-मन में भारत बसता

कहती छब्बीस जनवरी है ।

देश हमारा अपना है

अपने हैं मौलिक अधिकार ।

कर्तव्यों को भूल ना जाना

उन्हें निभाने रहना तैयार ।

विकसित देश की आशाएं

अभी भी अधूरी हैं ।

जन-गण-मन में भारत बसता

कहती छब्बीस जनवरी है ।

बलिदानों की बलिवेदी पर

किया जिन्होंने प्राणों का दान ।

उन शहीदों को न भूलें

आज़ाद किया जिन्होंने हिन्दुस्तान ।

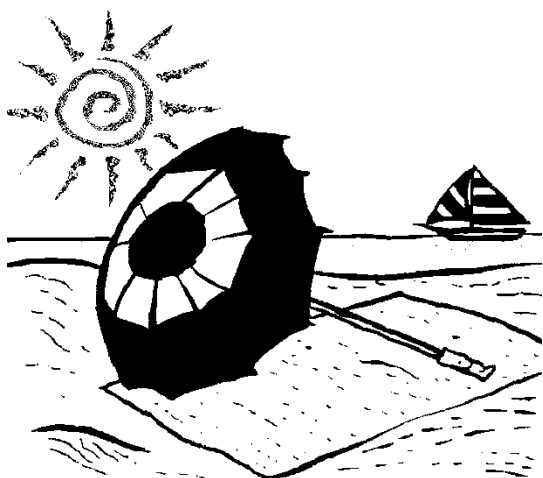
गाँधी, सुभाष की अभिलाषाएं

आज भी हुई ना पूरी हैं ।

जन-गण-मन में भारत बसता

कहती छब्बीस जनवरी है ॥





18. गर्मी की छुट्टियां

हुई परीक्षा, खत्म पढ़ाई
गर्मी की छुट्टियां है आई ।
भूलकर स्कूल और बस्ते
सबके चेहरे हँसते-हँसते ।
गाँव की सबको याद सताई
गर्मी की छुट्टियां है आई ।
तरबूज, मतीरे है खाने
आम, चीकू और अनारदाने ।
भाए कुल्फी, शरबत, ठण्डाई
गर्मी की छुट्टियां है आई ।
सुबहोशाम खूब खेलेंगे
नानी से कहानी सुनेंगे
मौज-मस्ती सबको मनभाई
गर्मी की छुट्टियां है आई ॥

19. गिलहरी

गिलहरी घर में आती-जाती
सबके मन को है यह भाती ।
पीठ पर इसके तीन धारियां
कितनी सुंदर बड़ी लुभाती ॥
नन्ही-सी है भोली-भाली
इसकी हर एक अदा निराली ।
पूँछ उठाकर चिक्-चिक् करके
अपनी मीठी आवाज निकाली ॥
आंखें इसकी काली-काली
चाल भी देखो है मतवाली ।
बच्चों को यह बहुत सुहाती
गिलहरी घर में आती-जाती ॥



20. गुड़िया रानी

गुड़िया रानी, गुड़िया रानी
लगती कितनी सुघड़ सयानी ।

भूरे बाल, नीली आंखें
जैसे हो परियों की रानी ।
पढ़ना-लिखना उसको भाए
टीवी से करती आनाकानी ।
बड़ी होकर डॉक्टर है बनना
अभी से नन्हे मन में ठानी ।
टॉफी, बिस्कुट उसको भाए
नहीं दो तो करे मनमानी ।
कभी-कभी जब रुठे तो
किसी की बात न उसने मानी ।
उसकी टेढ़ी-मेढ़ी बातें



पहेली है अबूझ अजानी ।
पर उसकी तुतली मीठी बोली
लगती बड़ी मधुर सुहानी ।
गुड़िया रानी, गुड़िया रानी
लगती कितनी सुघड़ सयानी ॥

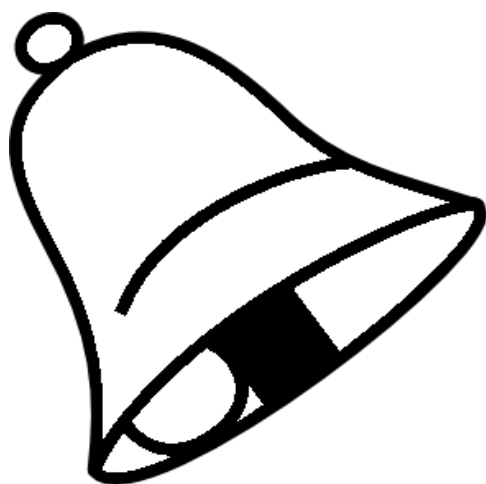
21. गुब्बारे

लाल-नीले, पीले-गुलाबी
कितने रंग-बिरंगे गुब्बारे ।
हल्के-फुल्के, हवा में उड़ते
बच्चों को लगते हैं प्यारे ॥
बाज़ारों, दूकानों और ठेलों में
गुब्बारे बिकते मेलों में ।
बच्चे उनको देख निहारे
कितने रंग-बिरंगे गुब्बारे ॥
ढेर सारे गुब्बारे लाते
जन्म-दिन पर घर सजाते
मूंह से इनमें फूंक मारे ।
कितने रंग-बिरंगे गुब्बारे ॥
उड़ते कुछ आसमान में,
कुछ सजते घर और दूकान में,
आकार इनके न्यारे-न्यारे
कितने रंग-बिरंगे गुब्बारे ॥



22. घंटी

टन-टन-टनन घंटी बोली
 बच्चे करने लगे ठिठोली ।
 कक्षाएं अब हो गई सारी
 घर जाने की आई बारी ॥
 टन-टन-टनन घंटी बोली
 मंदिर में भक्तों की टोली ।
 सब मिलकर करते पूजन
 गाते ईश्वर के मीठे भजन ॥
 टन-टन-टनन घंटी बोली
 मां ने दरवाजे की कुंडी खोली ।
 डाकिया चिट्ठी लेकर आया
 खबरें खट्ठी-मीठी लाया ॥



23. घिर आए बादल

कूहू-कूहू कोयलिया गाए

टर्टर-टर्टरमेंढक टर्ताए ।

वन में नाचन लगे मयूरा

घनन-घनन बादल घिर आए ।

श्वेत-श्याम हुआ नीलाम्बर

मेघ-पट में छिप गया भास्कर ।

कड़क-कड़क बिजुरिया चमके

टपक-टपक बूंदें करती स्वर ।

ग्रीष्म से तपते जन-जीवन को

काले-काले मेघा मनभाए ।

वन में नाचन लगे मयूरा

घनन-घनन बादल घिर आए ।

टिप-टिप करके बरसा पानी,

खुश हैं बच्चे, खुश बूढ़ी नानी ।

धुल गए पत्ते, धुल गए पौधे

धुल कर हो गई धरा सुहानी ।

जल को तरसी इस धरती पर

अम्बर से अमृत बरसाए ।

वन में नाचन लगे मयूरा

घनन-घनन बादल घिर आए ॥



24. चंदा मामा

गोल-मटोल है चंदा मामा
 सफेद रूप है कितना प्यारा ।
 काली रात में एक अकेला
 आसमान में सबसे न्यारा ॥
 शाम ढले पर चंदा आए,
 इसकी शीतल छाया भाए,
 चांदनी में नहाए जग सारा ।
 चंदा मामा कितना प्यारा ॥
 तारे सब फीके पड़ जाते,
 पूनम के दिन धुंधला जाते,
 रहता केवल एक सितारा ।
 चंदा मामा कितना प्यारा ॥
 कभी घटता, कभी बढ़ता
 अपना रूप बदलता रहता
 अमावस को छिप जाता सारा ।
 चंदा मामा कितना प्यारा ॥

25. चिड़िया ओ चिड़िया

चिड़िया ओ चिड़िया

तुम इतनी क्यों प्यारी

चहकने से तुम्हारे

गुनगुनाए बगिया सारी ॥

दिखने में हो भोली-भाली

नन्हा-सा है आकार ।

मगर पंखों में भरकर सपने

नाप लेती सारा संसार ॥

चीं-चीं कर देहरी पर

गूँजा देती हो आँगन हमारा ।

सुबह आती जगाने सबको

शाम को पेड़ों पर करती बसेरा ॥

चुगती हो दाना धीरे-धीरे

चलती जैसे नन्ही गुड़िया ।

रहती और चिड़ियों के संग तुम

मानो हो बचपन की सखियां ॥

तुम्हारी अदाएं, तुम्हारा कलरव

है रूप तुम्हारा बड़ा मनुहारी ।

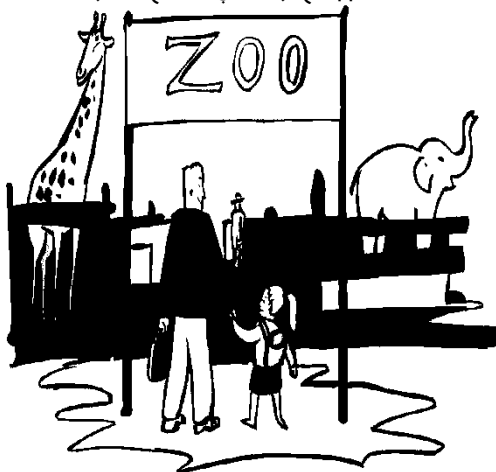
चिड़िया ओ चिड़िया

तुम इतनी क्यों प्यारी ॥



26. चिड़ियाघर

पंछी-पखेरू कितने सारे
 भाँति-भाँति के न्यारे-न्यारे ।
 जीव-जंतुओं का घर है
 चिड़ियाघर में रहते सारे ॥
 शेर यहां है, भालू भी है
 मगरमच्छ और मछलियां भी हैं ।
 तोते, मैना, बतख के संग
 रंग-बिरंगी तितलियां भी हैं ॥
 कभी मूंगफली, कभी केला खाए,
 ना दें, तो फिर बहुत चिढ़ाए ।
 लंगूर और बंदर वाले पिंजरे
 बच्चों के मन को भाए ॥
 लोमड़ी, सियार, गीदड़ भी हैं
 सांप, कोबरा और अजगर हैं ।
 मोर यहां हैं रंग-बिरंगे
 वन जैसा यह चिड़ियाघर है ॥



27. जन्म दिन

चिन्टू चूहे का जन्मदिन आया
मां ने घर को खूब सजाया ।
कहीं गुब्बारे कहीं बल्लियां
घर का माहौल जगमगाया ॥
मां ने केक और मिठाई बनाई
चिन्टू को नई ड्रेस पहनाई ।
हाथी, घोड़े, भालू के संग
चिड़िया, बतख और मैना आई ॥
शेर, बन्दर, खरगोश भी आए
साथ में सुन्दर गिफ्ट भी लाए ।
मीनू कोयल ने मीठी वाणी में
जन्मदिन के गीत गाए ॥
तभी बिल्ली मौसी आई
चिन्टू को आने लगी रूलाई ।
बोला मौसी, जन्मदिन है मेरा
तुम भी खाओ केक, मिठाई ॥
मौसी बोली, सुन भान्जे
मुझसे भी तू ले ले बधाई ।
नफरत को भूल प्यार बांटें
यही उपहार मैं हूँ लाई ॥



28. टिक टिक घड़ी

टिक-टिक कर चलती घड़ी
 सबको इसकी जरूरत पड़ी ।
 इसके 12 अंक अनोखे
 अनमोल रत्नों की लड़ी ॥
 तीन सूईयां इसकी गज़ब
 समझाए जीवन का मतलब ।
 बचपन, यौवन है जोशीला
 बूढ़ी घंटे की चाल बड़ी ।
 टिक-टिक कर चलती घड़ी
 सबको इसकी जरूरत पड़ी ॥
 बिना समय कुछ हो नहीं पाए
 बीते समय तो सब पछताए ।
 सफल वही जग में हो पाए
 समझे अनमोल जो हर घड़ी ।
 टिक-टिक कर चलती घड़ी
 सबको इसकी जरूरत पड़ी ॥
 जिसने समय से नाता जोड़ा
 मूँह कभी न पीछे मोड़ा ।
 आगे बढ़ता ही गया
 मंज़िल स्वागत को खड़ी ।
 टिक-टिक कर चलती घड़ी
 सबको इसकी जरूरत पड़ी ॥





29. टीचर

मेरी टीचर कितनी प्यारी
बच्चों की वो बहुत दुलारी ।
ममता की वो मूरत लगती
दुनिया से लगती वो न्यारी ॥
डांट-फटकार नहीं अपनाती
प्यार से सबको है समझाती ।
समय पर कक्षा में वो आकर
अनुशासन का पाठ पढ़ाती ॥
गणित हो या हो संस्कृत
सरल बनाकर वो समझाए ।
बच्चों में वो भेद न करती
सबको एक समान अपनाए ॥
कहानियां, कविताएं हमें सुनाती
खेल-कूद भी खूब कराती ।
बचपन के हर लम्हे को
जी भरकर जीना हमें सिखाती ॥
शिकायत कभी न करती

माफ़ करे नादानी सारी ।
मेरी टीचर कितनी प्यारी
बच्चों की वो बहुत दुलारी ॥

30. टीनू बेचारी

टीनू बोली सुन लो मम्मी
बस्ता लगता मुझको भारी
कुछ किताबें कम करवा दो
पढ़नी पड़ती कितनी सारी ।
स्कूल से मुझे डर लगता है,
टीचर रखती डण्डा भारी
अगर काम नहीं पूरा करते
सज़ा मिले और बोलो सॉरी ।
किताबों के ढेर के आगे
नन्हा बचपन कब से हारी
टॉमी के संग खेल नहीं पाती
फंस गई है टीनू बेचारी ॥



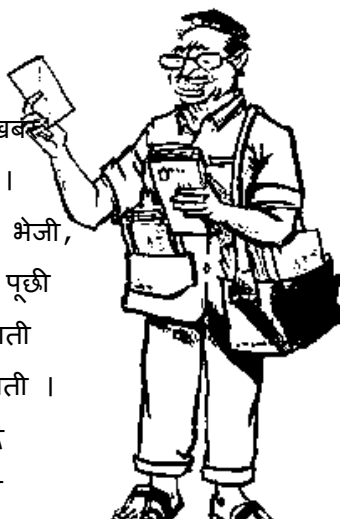
31. ठंडी हवाएं

सुबहो शाम चले ठंडी हवाएं
 नसों में बहता खून जमाए ।
 थर-थर अंग-अंग कांपे
 जाड़े के दिन है आए ।
 लम्बी लम्बी हुई हैं रातें
 दिन छोटा सा होता जाए ।
 कम्बल, शॉल, रज़ाई में
 शाम ढले ही सब सो जाए ।
 जम्हाई माहौल में फैली
 सन्नाटे सब और पसराए ।
 दबे पाँव आने वाले
 चोरों को ऋतु यह भाए ।
 सबसे पहले उगने पर
 सूरज भी थोड़ा अलसाए ।
 लेकिन उसकी धूप गुनगुनी
 हर प्राणी के मनभाए ।
 शरबत की जगह चाय ने ली है
 कुल्फी छोड़ समोसा भाए ।
 ठण्डा कुछ भी नहीं चलेगा
 गरम-गरम को जी ललचाए ॥



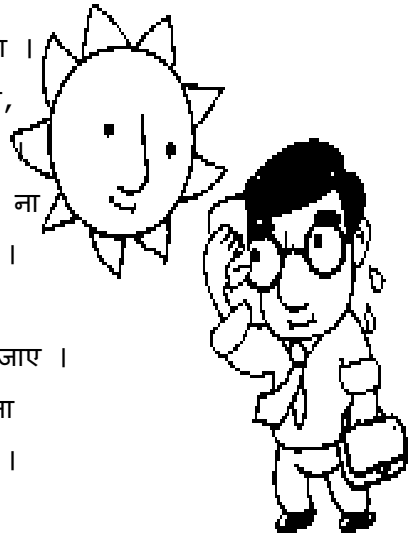
32. डाकिया

दर-दर जाता, चिट्ठी लाता
घर-घर खबरें सबको सुनाता
कहीं खुशी, कहीं दुःख की खबरें
डाकिया सभी जगह पहुंचाता ।
कहीं बहिन ने भाई को राखी भेजी,
कहीं बेटे ने मां से कुशल है पूछी
पिता ने बेटा को लिखी है पाती
कहीं चिट्ठी गम के आंसु लाती ।
तोहफे, खबरें, खुशियां, दर्द
डाकिया घर-घर तक पहुंचाता
दर-दर जाकर चिट्ठी बांटकर
अपनों की खबरें पहुंचाता ॥



33. तपता सूरज बहे पसीना

तपता सूरज बहे पसीना
 जून कहो या जेठ महीना ।
 पंछी पखेरू बेकल हो रहे,
 ताल तलैया भी सूख रहे
 जल बिन जीवन है कहीं ना
 तपता सूरज बहे पसीना ।
 गर्मी ने तेवर दिखलाए
 जन-जीवन बेहाल हुआ जाए ।
 कब आएगा सावन महीना
 तपता सूरज बहे पसीना ।
 वसुन्धरा का हिय जले
 धरती जलती पाँव तले ।
 मुश्किल हो गया सबका जीना
 तपता सूरज बहे पसीना ॥



34 . तारे

मीलों दूर हैं, हमसे फिर भी
अम्बर से धरती को निहारे
जगमग-जगमग प्यारे-प्यारे
आसमान में चमके तारे ।
अनगिन तारे आसमान में
चंदा के संग करें रमण
काली लम्बी रात से इनका
सदियों से होता है रण ।
टिमटिम कर अपने प्रकाश से
जग को कर देते रोशन
ऐसा लगता जैसे धरती
ओढ़े हैं तारों का दामन ।
घोर अंधेरी रात से ये
सदा ही जीते कभी न हारे
जगमग-जगमग प्यारे-प्यारे
आसमान में चमके तारे ॥



35. तितली

आज बगीचे में आई
 एक नन्हीं रंग-बिरंगी तितली
 कितने रंग समाए खुद में
 लाल गुलाबी नीली पीली ।
 जीवन का हर रंग है उसमें
 ऊँचा उड़ने की है चाहत
 लेकिन धरती के फूलों पर ही
 उसको मिलती सच्ची राहत ।
 बैठे हर एक डाल-डाल पर
 चूसे हर एक कली-कली
 आज बगीचे में आई
 एक नन्हीं रंग-बिरंगी तितली ।
 कभी इठलाती, कभी शरमाती
 मन को भी है भरमाती
 पीछे-पीछे में भागूं
 पर वो आगे निकल जाती ।
 फुर्र से उड़ती इधर-उधर
 लगती कितनी सुघड़ भली
 आज बगीचे में आई
 एक नन्हीं रंग-बिरंगी तितली ।



36. दीपों का त्यौहार

जगमग-जगमग दीप जले
सबके चेहरों पर रौनक खिले।
रघुनन्दन हैं आए अवध को
चौदह बरस के बाद
संग है सीता और लक्ष्मण
हुआ अवध फिर से आबाद ।
मां कैकेयी का वचन निभाने
गए रघुवर वनवास को
कर अधर्मियों को समाप्त
फिर लौटे आवास को ।
अयोध्या में खुशियां लौटी
घर-घर में घृत दीप जले
नर-नारी हो या बच्चे बूढ़े
सबके चेहरों पर फूल खिले ।
सदियों से है चला आ रहा
यह दीपों का त्यौहार
पाप पर पुण्य विजय का प्रतीक
प्रेम और भाईचारे का उपहार ।



37. धन्य धरा ये भारती

माँ भारती के भाल पर
 वीर अपने रक्त का तिलक कर ।
 काल के कपाल पर
 रोशन अपना नाम कर ॥
 भारत मां के वीर सपूत
 देश तुझको पुकारता ।
 तेरे शौर्य से, तेरे तेज से
 शत्रु थर-थर कांपता ।
 दे ऐसी सज़ा तू आज कि
 फिर देखे न पलट कर ।
 माँ भारती के भाल पर
 वीर अपने रक्त का तिलक कर ॥
 धन्य तेरी जननी
 धन्य धरा ये भारती ।
 आंसु पीकर वीरांगनाएं
 करें तेरी आरती ।
 राष्ट्रप्रेम की बलिवेदी पर
 निज को कुरबान कर ।
 माँ भारती के भाल पर
 वीर अपने रक्त का तिलक कर ॥



38. धूल

कभी सड़क पर, कभी डगर पर
यहाँ वहाँ मैं उड़ती जाऊँ ।
मानव पैरों के नीचे दबकर
हर रोज लाखों थपेड़े खाऊँ ॥
जब लोग मेरे ऊपर से चलते
दर्द से उफ़! भी न कर पाऊँ ।
तड़प-तड़प मन मेरा कहता
इन्सानों को सबक सिखाऊँ ॥
एक दिन ऐसा भी आएगा
जब कण-कण मिल एक हो जाऊँ ।
बनकर तेज भयावह आँधी
हर एक को मैं धूल सनाऊँ ॥
पददलित को रौंदने का
मनुजों फल मिल सकता है ।
जो कदमों के नीचे है
कल आसमान में उठ सकता है ॥
पतितों का भी मान रखो
वो भी आहें भर सकता है ।
शोषण की हद को लाँघो मत
सबका तख्त पलट सकता है ॥

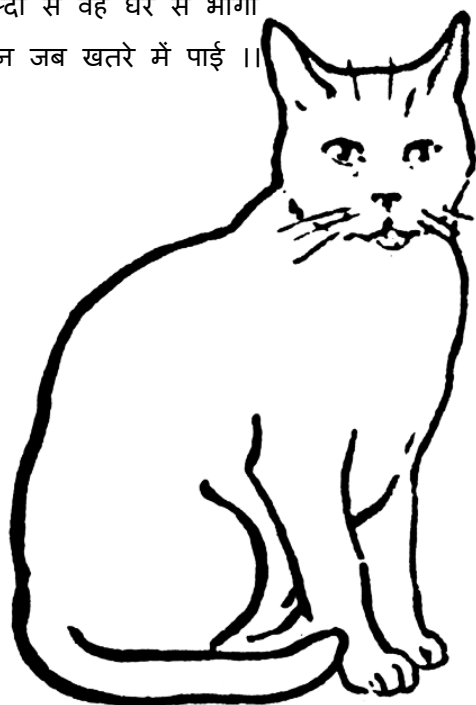
39. नए साल का तोहफ़ा

ऐसा हो नए साल का तोहफ़ा
 मिले सबको प्यार और वफ़ा ।
 बड़ों से आशीष मिले
 छोटों से स्नेह अपार ।
 सौहार्द्र और भाईचारे से
 दमक उठे सारा संसार ।
 कोई न हो किसी से खफ़ा
 मिले सबको प्यार और वफ़ा ।
 भेद की दीवारें गिरें
 मिटे अन्याय और अनाचार ।
 रिश्तों में माधुर्य बढ़े
 सम्बन्धों का हो विस्तार ।
 खुशियां जीवन का हो फ़लसफ़ा
 मिले सबको प्यार और वफ़ा ।
 बचपन फूलों सा महक उठे
 यौवन की छा जाए बहार ।
 नए साल में असहाय ज़रा को
 मिले समाज से नव आधार ।
 मुस्कानें बिखरें हर दफ़ा
 मिले सबको प्यार और वफ़ा ।
 सुख, समृद्धि व विकास का
 मिले राष्ट्र को तोहफ़ा ॥



40. नटखट बिल्ली

नटखट बिल्ली घर में आई
चट कर गई वो दूध मलाई
चूहे भागे इधर-उधर
उनकी भी शामत थी आई ।
कैसे उसको घर से भगाए
कोई तो उपाय सुझाए ।
तभी आए पड़ोस के अंकल
साथ में अपना टॉमी लाए ।
देखकर टॉमी को घर में
बिल्ली बहुत ही घबराई ।
जल्दी से वह घर से भागी
जान जब खतरे में पाई ॥



41. नदिया रे नदिया

नदिया रे नदिया
 तू बहती ही जाए
 लहरों के संग-संग
 तू कलकल सुनाए ।
 नदिया रे नदिया
 तुझमें इतना है पानी
 पहाड़ों को काट देतीतेरी खानी ।
 नदिया रे नदिया
 तुम जीवन हमारा
 जल देकर बनती
 कृषि का सहारा ।
 नदिया रे नदिया
 बाढ़ क्यों लाती
 गांव-शहर मेंतबाही मचाती ।
 नदिया रे नदिया
 तुम निर्मल, चंचल
 सागर को मिलनेरहती हो आकुल ।
 अपने किनारे तू
 सभ्यताएं बसाए
 लहरों के संग-संग
 तू कलकल सुनाए ॥



42 . नन्हा दीया

नन्हा दीया, नन्ही बाती
नन्ही सी है लौ की आस ।
झिलमिल-झिलमिल दीया जले
फैलाए चारों ओर प्रकाश ।
चाहे कितना हो घोर अँधेरा
हो अमावस की काली रात ।
एक नन्हें से दीपक से
हो जाएंगे सब परास्त ।
निराशा के काले बादल में
बिजली की कौंध दिखलाए आस ।
झिलमिल-झिलमिल दीया जले
फैलाए चारों ओर प्रकाश ।
मिट्टी का यह दीया देखो
जीवन का पाठ पढ़ाए ।
मिट्टी का ही मानव जीवन
मिट्टी में एक दिन मिल जाए ।
जीवन में दीए की भांति
करें हम हर ओर उजास ।
झिलमिल-झिलमिल दीया जले
फैलाए चारों ओर प्रकाश ॥



43. नहीं हुई बड़ी

माँ बाबा से कहला दो ना
 नहीं हुई मैं अभी बड़ी ।
 ब्याह की इतनी जल्दी क्या है
 क्या हो गई मैं बोझ बड़ी ?
 मुझको आगे भी पढ़ना है
 पढ़-लिखकर कुछ बनना है ।
 टीचर जी स्कूल में कहती
 शिक्षा लड़की का गहना है ॥
 लेकिन बाबा नहीं समझ रहे
 कैसी विपदा आन पड़ी ?
 माँ बाबा से कहला दो ना
 नहीं हुई मैं अभी बड़ी ।
 अभी तो मुझसे बाल न बंधते
 नहीं संभले चूनर मेरी ।
 कैसे मैं छोड़ पाऊंगी
 बाबुल यह दहलीज तेरी ।
 मुझको गोद तुम्हारी प्यारी
 कहती है मेरी चूड़ी ।
 माँ बाबा से कहला दो ना
 नहीं हुई मैं अभी बड़ी ॥



44 . नानी

मेरी नानी कितनी प्यारी
रोज सुनाए मुझे कहानी
कभी परियों की, कभी देवों की
कभी सुनाए राजा रानी ।
नानी अच्छा खाना खिलाती,
खूब प्यार से लोरी सुनाती ।
आंक पे चश्मा, झुकी कमरिया
फिर भी वो बच्ची बन जाती ।
किताबें नहीं, जीवन को पढ़ा है
उसमें बीती उमरिया सारी ।
ज्ञान धर्म की बातें करती
मुझसे मेरी नानी प्यारी ॥



45. निंदिया रानी

रोज रात को आए
 दिन की सारी थकान मिटाए
 है बहुत ही सयानी
 निंदिया रानी निंदिया रानी ।
 स्वप्न लोक की सैर कराए
 उड़न खटोले पर ले जाए
 दिखलाए परियों की रानी ।
 निंदिया रानी निंदिया रानी ।
 सुबह-सुबह आंखों से जाए
 दिन भर सबको ये अलसाए
 रात को करती मानामानी
 निंदिया रानी निंदिया रानी ॥





46. पतंग

आसमान में लहराती
 दूर-दूर तक है जाती
 इन्द्रधनुषी रंगों वाली
 हर एक के मन भाती
 उड़ती डोर के संग-संग
 कितनी भली लगे पतंग ।
 कभी काटती कभी कट जाती
 घर की छत पर धूम मचाती
 ज्यों ज्यों ऊपर उड़ती जाती
 मन में यह रोमांच जगाती
 सबके दिलों में जगाए उमंग
 कितनी भली लगे पतंग ।
 रंग-बिरंगी पंछी जैसी
 संक्रांति के आई संग
 आसमान में उड़ती ऐसे
 जैसे हो उन्मुक्त विहंग

तरह-तरह के रंगों वाली
कितनी भली लगे पतंग ॥

47. पतझड़

पतझड़ की रुत है आई
पेड़ों पर पीलापन लाई
झर-झर पत्ते झरने लगे
कुदरत पर उदासी छाई ।
सूख रहे अब सभी तरूवर
धरती मां की कोख है बंजर
मेघों ने वनवास लिया
खाली-खाली है नीला अम्बर ।
सर्द हवाएं बहने लगी
आंधी-तूफान संग लाई ।
पतझड़ की रुत है आई
पेड़ों पर पीलापन लाई ।
हरियाली फसलों को जैसे
लगी किसी की बुरी नज़र
जंगल में भी झरे पत्ते
उड़ कर करते हैं सर-सर ॥





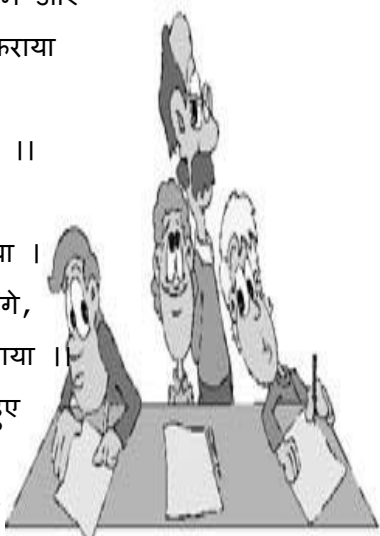
48. परियों की रानी

छोटा था तब सुनी कहानी
सुन्दर है परियों की रानी ।
उजला-उजला रूप है उसका
देखे वो करता हैरानी ।
चंदन सी खूशबू है उसमें
आंखें नीली झील सी गहरी ।
नागिन से काले लंबे बाल
वेश सफेद और पंख सुनहरी ।
मासूमियत बच्चों सी है
कमसिन है उसकी जवानी ।
अल्हड़ है, शैतां भी है
न्यारी सी है नादानी ।
परियों के देश में
उसे है किसी का इंतजार ।
सफेद घोड़े पर बैठकर
आएगा उसका राजकुमार ।
वो बचपन भी बीत गया
दस्तक दे चुकी जवानी ।

सफेद घोड़े की लगाम थामे
में ढूँढ़ रहा परियों की रानी ॥

49. परीक्षाओं का मौसम

मौज-मस्ती करते रहे,
नहीं पढ़ाई में ध्यान लगाया ।
अब चिंता सताने लगी
जब परीक्षाओं का मौसम आया ॥
गणित, विज्ञान न समझ में आए
इतिहास से सबका सिर चकराया
देखकर लंबा पाठ्यक्रम
डर से सबका दिल घबराया ॥
कुछ ट्यूशन पर जाने लगे
कुछ ने कोचिंग को अपनाया ।
कुछ अपने बलबूते पढ़ने लगे,
बाकी को कुछ समझ न आया ।
मेहनत करने वाले सफल हुए
मीठा उन्होंने फल पाया ।
वहीं आलस करने वालों का
परीक्षाफल से मूंह मुरझाया ॥
जीवन भी एक परीक्षा है,
मेहनत का इसने पाठ पढ़ाया ।
परीक्षाओं का मौसम आया ।
परीक्षाओं का मौसम आया ॥





50. पेड़

कितने प्यारे लगते पेड़
 सबको न्यारे लगते पेड़ ।
 प्राणवायु के स्त्रोत हैं ये
 जीवन के रक्षक हैं पेड़ ॥
 पतझड़ में पते झड़ जाएं
 आशाएं न झड़ती इनसे ।
 बसंत को आना ही पड़ता है
 कलियां खेलने लगती फिर से ॥
 मौसम बदले, रूप भी बदले
 फिर भी मुस्काते रहते पेड़ ।
 कितने प्यारे लगते पेड़
 सबको न्यारे लगते पेड़ ॥
 नरम पत्तियां, लचीली शाखाएं
 कठोर मगर हैं इनकी काया ।
 फल, फूल, कंद-मूल हैं देते,
 देते सबको शीतल छाया ॥

पौधा हो या वृक्ष विशाल
हर हाल में काम ही आते पेड़ ।
कितने प्यारे लगते पेड़
सबको न्यारे लगते पेड़ ॥

51. पौधे

बीज बोया मिट्टी में,
 सींचा देकर खाद और पानी ।
 धरती के आंचल में फूटा अंकुर
 कलियां निकली बड़ी सुहानी ॥
 चिड़ियां चहकी बगिया महकी,
 फूल खिले फिर क्यारी-क्यारी ।
 पौधों पर अंगड़ाई छाई
 बच्चों की भी गूंजी किलकारी ॥
 कोमल हरी पतियां नाजुक
 झोंकों ने जब उनको सहलाया ।
 तितली और भंवरो ने भी
 परागकणों को छितराया ॥
 नन्हे-नन्हे आज के पौधे
 कल के पेड़ों का बचपन हैं ।
 प्रकृति की मासूमियत है
 नादानियां और अल्हड़पन हैं ॥



52. फागुन का त्यौहार

एक बरस तक कर लो बच्चों
लम्बा सा इन्तज़ार ।
फिर आएगा प्यार बांटता
फागुन का त्यौहार ।
स्नेह बरसाता, खुशी लुटाता,
आता है हर साल ।
वैर मिटाता और उड़ाता
रंग, अबीर, गुलाल ।
लाल, गुलाबी, नीले, पीले
रंग-बिरंगे सबके चेहरे ।
द्वेषभाव सब मिट जाते
मानस में सबके फूल खिले ।
बच्चे, बूढ़े, नर और नारी
एक रंग में रंग जाते ।
जात, पात और सम्प्रदाय के
सभी भेद हैं मिट जाते ।
सदियों से है चला आ रहा
यह फागुन का त्यौहार ।
पाप पर पुण्य विजय का प्रतीक
प्रेम और भाईचारे का उपहार ॥



53. फौजी का अरमान

मां माथे पर तिलक लगा दे
 सरहद पर लड़ने जाऊंगा ।
 बहिना स्नेह की राखी बाँध
 रिपु-लहू रंगी चूनरिया लाऊंगा ।
 बाबा दो आशीष मुझे
 देश का कर्ज चुका दूँ मैं ।
 भैया तुम भी गले लगा ले
 जाने फिर कब आऊंगा ।
 गांव-गली में सबसे मिल लूँ
 वर्दी अपनी पहन संवर लूँ
 मैं भारत मां का लाल
 युद्ध में जीत दिलाऊंगा ।
 बमों से, बन्दूकों से खेलूंगा
 हंसते-हंसते हर वार झेलूंगा ।
 किन्तु भारत मां के दामन पर
 दाग न कोई लगाऊंगा ।
 अमन-चैन कायम हो जाए
 सीमाओं पर शांति छाए ।
 तब तक दूर रहूंगा मैं
 घर भी ना लौट पाऊंगा ।
 मां माथे पर तिलक लगा दे
 सरहद पर लड़ने जाऊंगा ॥





54. बचपन

नटखट प्यारा भोला बचपन
लगता है प्यारा सा मधुवन ॥
तरह-तरह के फूल हैं जिसमें
सुन्दर-सुन्दर कलियां भी हैं ।
बच्चों की भोली बातों सी
नाजुक-नाजुक तितलियां भी हैं ।
सुख-दुःख की छांव से परे
बीते बच्चों का जीवन ।
नटखट प्यारा भोला बचपन
लगता है प्यारा सा मधुवन ॥
ऊँचे-ऊँचे वृक्ष है जिसमें
छोटी-छोटी झाड़ियां भी हैं ।
बच्चों की उन्मुक्त हँसी-सी
चहचहाती चिड़ियां भी हैं ।
ऊँच-नीच से दूर ही रहता
नन्हे-मुन्नों का यह गुलशन ।

नटखट प्यारा भोला बचपन
लगता है प्यारा सा मधुवन ॥

55. बरसा पानी

रिमझिम-रिमझिम बरसा पानी

लो आई फिर बरखा रानी ।

बच्चे नहाने घर से निकले

लेकर कागज की नाव ।



गली मुहल्ले भरे लबालब

तेज बहुत पानी का बहाव ।

कभी बरसे झिरमिर फुहारें

कभी बरसे झमाझम पानी ।

रिमझिम-रिमझिम बरसा पानी

लो आई फिर बरखा रानी ।

धुली-धुली सी धरती

सौँधी-सौँधी महक उठे ।

नीले-नीले आसमान में

इन्द्रधनुष सा दमक उठे ।

देख प्रकृति का श्रंगार

सबको होती है हैरानी ।

रिमझिम-रिमझिम बरसा पानी
 लो आई फिर बरखा रानी ॥

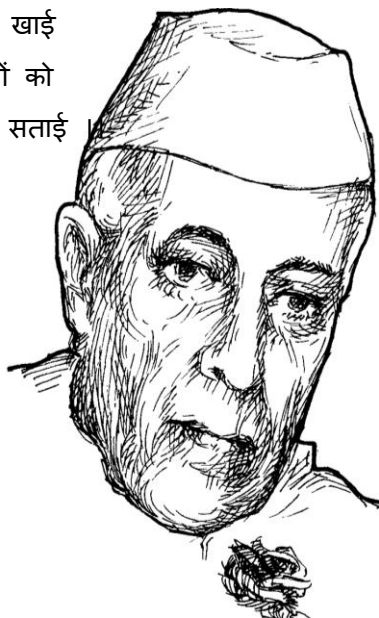
56. बस्ता भारी

सब बच्चों की है लाचारी
ढोना पड़ता बस्ता भारी ।
ढेरों किताबें ढेरों कॉपियां
रोज पड़े ले जानी ।
क्लासवर्क, होमवर्क करते-करते
याद आती दादी-नानी ।
छोटे-छोटे बच्चों में भी
नज़र की हो जाती बीमारी ।
सब बच्चों की है लाचारी
ढोना पड़ता बस्ता भारी ॥
खेल-कूद सब भूल गए हैं
भूल गए परियों की कहानी ।
चंदा मामा की लोरी भी
इनके लिए हुई अनजानी ।
रटते-रटते सिलेबस अपना
सेहत सबने बिगाड़ी ।
सब बच्चों की है लाचारी
ढोना पड़ता बस्ता भारी ॥



57. बाल दिवस

बाल दिवस पर नन्हे-मुन्नों को
 चाचा नेहरू की याद सताई
 पंचशील अपनाकर जिसने
 शांति की राह दिखलाई ।
 बच्चों के प्यारे चाचा ने
 अमन-चैन की सीख सिखाई
 दुनिया के कोने-कोने में
 प्रेम भरी पाती भिजवाई ।
 शासक देश के होकर भी
 बच्चों के संग खुशियां पाई
 काली अचकन, लाल गुलाब
 छवि बच्चों के मन को भाई ।
 देश की खातिर मर-मिटने की
 कसमें आज सभी ने खाई
 बाल दिवस पर बच्चों को
 चाचा नेहरू की याद सताई ।



58. बिजली

कड़क-कड़क कर चमके बिजली
काले नभ में दमके बिजली
बादलों में लड़ाई कराकर
खुश हो कैसी चहके बिजली ॥
इसके तेज शोर से डरकर
बैठ गए सब घरों में छिपकर
सन्नाटे में कड़के बिजली
काले नभ में दमके बिजली ॥
बादल उमड़े चारों ओर,
बरस रहा पानी घनघोर,
दिल दहलाए गिर के बिजली
काले नभ में दमके बिजली ॥





59. बुखार

भारत-पाक का मैच था आना
चिन्टू को मगर स्कूल जाना ।
सोच-सोच कर थक गया चिन्टू
तभी मिला उसे एक बहाना ।
बोला मम्मी मैं हूँ बीमार
चढ़ गया मुझको तेज बुखार ।
छूकर चिन्टू को मम्मी घबराई
जल्दी से डॉक्टर को लाई ।

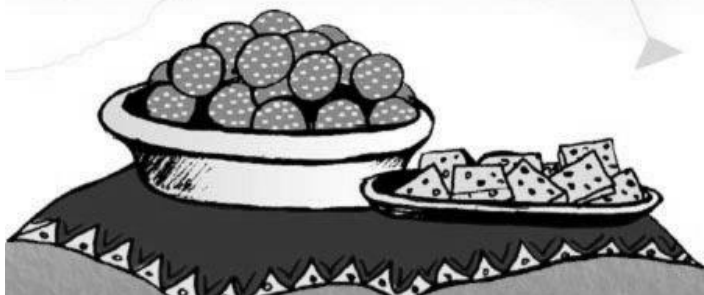
नब्ज देखकर हँस गई डॉक्टर
बोली लाओ थर्मामीटर ।
इसको चढ़ा है तेज बुखार
देने होंगे इंजेक्शन चार ।
सुनकर इंजेक्शन का नाम
घबरा गए चिन्टू राम ।
बोला सॉरी मम्मी सॉरी डॉक्टर
नहीं हुआ हूँ मैं बीमार ।
अँगीठी के पास बैठकर
चढ़ाया मैंने तेज बुखार ॥

60. मकर संक्रांति

तिल के लड्डू, फीणी, घेवर
और पतंग का त्यौहार आया ।
सर्दी के घटने की घोषणा
मकर संक्रांति करने आया ॥
सूरज अब उत्तर में ज्यादा
समय बिताने वाला है ।
मतलब कि दिन का अरसा
रात से लंबा होने वाला है ॥
गजक, रेवड़ी, बड़े-पकौड़े
और बनेंगे कई पकवान ।
दिन भर होगी खूब मस्ती
पतंगों से रंगीन होगा आसमान ॥
गर्मी धीरे-धीरे बढ़ने लगेगी
सूरज की आंच बढ़ाने आया ।
सर्दी के घटने की घोषणा

मकर संक्रांति करने आया ॥

तिल गुड़ खाओ ।
मीठे वचन सुनाओ ॥



61. मैं हूँ परियों की शहजादी

मैं हूँ परियों की शहजादी
 मुझको प्यारी आजादी ।
 जहां भी जाऊं फूल खिला दूं,
 रहती हरदम मुस्काती ।
 एक दिन मैंने अपने मन में
 धरती पर जाने की ठानी ।
 मेरी सभी सहेलियों ने
 बात फटाफट मानी ।
 धरती की सारी बगिया में
 खेली मैं तो चारों ओर
 पता चला न मुझको
 हो गया अंधेरा घोर ।
 देख अंधेरा चारों ओर
 बहुत ही मैं घबराती
 मैं हूँ परियों की शहजादी
 मुझको प्यारी आजादी ॥



62. रक्षाबंधन

सोनू हाथी बहुत उदास
बहिन नहीं है उसके पास
देखकर अपनी सूनी कलाई
फूट पड़ी है उसे रुलाई ।
तभी आई मीनू गिलहरी
हाथ में ले राखी सुनहरी ।
बोली, "भैया आगे हाथ बढ़ाओ
मुझसे तुम राखी बंधवाओ" ।
सुनकर यह मीनू की बात
हाथी ने आगे बढ़ाया हाथ ।
माथे पर लगवाई रोली
खुशी में उसने आँख भिगोली ।
बोला "बहिना क्या दूँ तुम को
मेरा सब कुछ अर्पित तुझ को" ।
मीनू की आंखें भर आई
हाथी ने दी उसे मिठाई
और दिए सब अंगूर
दोनों ही थे खुश भरपूर ॥



63. रावण एक न मर पाते

हर वर्ष दशहरे के दिन,
पुतले कितने ही जल जाते ।
हम सब के मन में जो बैठे हैं
वो रावण एक ना मर पाते ।
देखें अधर्म को चहुँओर
हम सब है थामे उसकी डोर
अन्तर्मन को झकझोर
राम को नहीं ढूँढ़ पाते ।
हम सब के मन में जो बैठे हैं
वो रावण एक ना मर पाते ।
हर जगह बन गई है लंका
अहिल्या पर गौतम को शंका
बहकी बहकी है सूर्पनखा
लक्ष्मण न तलवार चलाते ।
हम सब के मन में जो बैठे हैं
वो रावण एक ना मर पाते ।
अहंकार को जब तक न जीते
अधर्म घट जब तक न रीते
तम की काली रजनी न बीते
तो कैसे सुप्रभात रवि आते ।
हम सब के मन में जो बैठे हैं
वो रावण एक ना मर पाते ॥



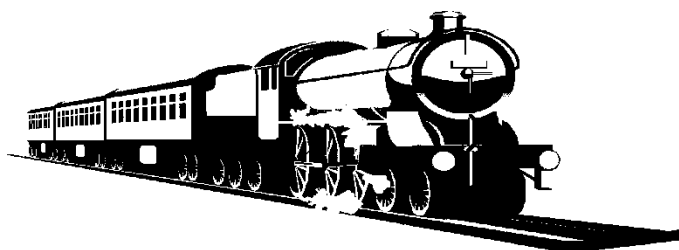
64. रेगिस्तान

दूर-दूर तक रेत बिछी है
पानी की यहां बहुत कमी है ।
कांटों वाले कैक्टस उगते
हरे पेड़ कहीं न दिखते ।
ऊंचे-ऊंचे रेत के टीले
मरीचिका से लगते चमकीले ।
दिन में रहता बहुत गरम
और रात में ठंडा मौसम ।
ऊंट की करते सभी सवारी
अच्छी लगती है ऊंटगाड़ी ।
यहां नहीं है नदी और नाले
पड़ते यहां पानी के लाले ।
प्रकृति में यहां रंग नहीं है
जीवन फिर भी बदरंग नहीं है ।
रंग-रंगीले तीज और त्यौहार
रेगिस्तान में लाए रंगों की बहार ॥



65. रेल आई

छुक-छुक करती आई रेल
 कितने लोगों को लाई रेल ।
 प्लेटफॉर्म पर शोर-शराबा
 धक्का-मुक्की रेलम-पेल ॥
 आगे इंजन, पीछे डिब्बे
 जैसे बच्चे खेलें खेल ।
 दौड़ रही पटरी पर हर-पल
 कभी न थकती देखो रेल ॥
 कितने सारे लोग हैं इसमें,



सबका मेल कराती रेल ।
 अलग धर्म हो, अलग हो भाषा
 सबको एक कराती रेल ॥
 बच्चों को यह बहुत सुहाए
 नाना-नानी के घर पहुंचाती रेल ।
 छुक-छुक करती आए रेल
 सबके मन को भाए रेल ॥

66. लौट आया बसन्त

पीले-पीले फूल खिले हैं
फिजां में फैली हुई सुगन्ध ।
मौसम ने रंगत बदली
लौट आया फिर से बसन्त ।
शाख-शाख अब हरी-भरी है
फसल लहलहा रही सुनहरी ।
धरती ने शृंगार किया
ओढ़कर वासन्ती चूनरी ।
कली-कली पर भंवरे बैठे
चूसे फूलों का मकरन्द ।
मौसम ने रंगत बदली
लौट आया फिर से बसन्त ।
कोमल-कोमल पत्ते निकले
पेड़ों पर छा गई बहार ।
चहचह चिड़ियों की गूंजे
सौंधी-सौंधी बहे बयार ।
महकाए गुलशन सारा
सरसों की भीनी भीनी गंध ।
मौसम ने रंगत बदली
लौट आया फिर से बसन्त ॥



67. वर्ष नया

वर्ष नया फिर से आया
 पुराने को विदा करें सहर्ष ।
 उन्नति और समृद्धि के
 आकाश पर हो भारतवर्ष ॥
 जय जवान, जय किसान
 जय विज्ञान का हो उद्घोष ।
 अर्द्ध-नग्न, अन्न-वस्त्र रहित
 निर्धन में भी भर दो जोश ॥
 नए साल में नई उमंग से
 ठाँवेंगे हम यह प्रण ।
 मातृभूमि की सेवा में
 अर्पित होगा तन, मन, धन ॥
 नई सदी में भय-मुक्त हो
 हिन्दोस्तान का जन-जीवन ।
 देश का हर बच्चा पढ़े
 मिले सभी को उचित पोषण ॥
 नारी का सम्मान बढ़े
 नहीं हो कभी उसका शोषण ।
 शांति अहिंसा से अनुप्राणित हो
 हिन्द देश का कण-कण ॥
 आतंकवाद से, अनाचार से
 जारी रहे सदा संघर्ष ।
 उन्नति और समृद्धि के



आकाश पर हो भारत वर्ष ॥

68. वर्षा रानी

वर्षा रानी, वर्षा रानी
 टिप-टिप-टिप बूंदें बरसाओ ।
 पक्षी प्यासे, पशु हैं प्यासे
 हर प्राणी की प्यास बुझाओ ॥
 सावन भादो आने वाले
 तुम बिजली, बादल संग लाओ
 सूखे ताल, सूखी नदियां
 पानी से इनको भर जाओ ॥
 आस लगाए सब बैठे हैं
 अम्बर में मेघा दिखलाओ ।
 इन्द्रधनुष भी राह देखता,
 उसकी भी बारी तो लाओ ॥
 कुदरत तुमसे ही सजती है,
 हरी चूनरिया इसे ओढाओ ।
 धरती की थाली खाली,
 धन-धान्य से इसे भर जाओ ॥
 रिमझिम-रिमझिम और झमाझम
 बरस-बरस कर मन हर्षाओ ।
 वर्षा रानी, वर्षा रानी
 टिप-टिप-टिप बूंदें बरसाओ ॥



69. विद्यालय

हमारा विद्यालय कितना प्यारा

फैलाए शिक्षा का उजियारा ।

अच्छाई की सीख है मिलती

जीवन बदला इसने सारा ॥

पढ़ते यहां बहुत से बच्चे

नैतिक, सरल और हैं सच्चे ।

किताबी बोझ नहीं डालता

खेल-कूद में मिलते नंबर अच्छे ॥

नृत्य, संगीत और गान यहां पर

कलाओं का है सम्मान यहां पर ।

बच्चों के गुणों को उभारता

अवसर मिलते समान यहां पर

धर्म-जाति का भेद नहीं है

सबको मिलता यहां पर ज्ञान

अध्यापक हैं गुणी बहुत

देते विद्या का नित दान ॥

घर से दूर होकर भी

घर जैसा ही लगता प्यारा ।

मेरा विद्यालय कितना प्यारा

फैलाए शिक्षा का उजियारा ॥



70. विविध स्वर

गूँज रहे हैं चहुँदिशा से
 अनगिन अद्भुत विविध स्वर ।
 झुलस रहा है राष्ट्र समूचा
 लग गया इसको भीषण ज्वर ।
 आतंकवाद की काली छाया
 समस्त राष्ट्र पर मंडराए ।
 भ्रष्टाचार रिश्वत की आंधी
 जन-जीवन को तड़पाए ।
 बेकार पड़ी है युवा पीढ़ी
 मन में है आक्रोश भरा ।
 बच्चे हैं मजबूर देश के
 हाथों में कुदाल थमा ।
 मूर्छित सी है राष्ट्र की नारी
 सदियों से सहकर शोषण ।
 संस्कृति जीवन को ढूँढ़ रही है
 राष्ट्र में ही हो रहा मरण ।
 जाति, धर्म के नाम पर
 बंटे हुए हैं भाई-भाई ।
 पड़ोसियों की नजर लगी है
 करना चाहे सभी लड़ाई ।
 बाढ़, भूकम्प, अकाल भी आते
 प्रकृति ढाने लगी कहर ।
 गूँज रहे हैं चहुँदिशा से



अनगिन अद्भुत विविध स्वर ॥



71. शाम

दिन भर रोशन करके जग को
 सूरज को आ गई थकान ।
 क्षितिज के पीछे छिपकर
 सूरज करने गया आराम ॥
 तारों की तब नींद खुली
 चन्दा को याद आया काम ।
 मन्दिर में भी शंख बजा
 मस्जिद में होने लगी अजान ॥
 पशु पक्षी भी घर को लौटे
 मनुजों को भी हो गया यह भान
 रातरानी को न्यौता देने
 शरमाती हुई आई शाम ॥

72. सबसे अद्भुत हिन्दोस्तान

सबसे अद्भुत, सबसे सुन्दर
सबसे प्यारा है हिन्दोस्तान ।
विभिन्न धर्मों के लोग हैं बसते
सब भारत में एक समान ॥
कितनी नदियां यहां हैं बहती
गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र महान
इसके ऊंचे-ऊंचे पर्वत
करते गौरव का गुणगान ॥
दक्षिण में पठार हैं विस्तृत
पश्चिम में फैलारेगिस्तान ।
प्रकृति की हर छवि इसमें
नतमस्तक सारा जहान ॥
भारत भू पर जन्म दिया
यहीं पर निकले यह प्राण ।
अन्त समय आने पर भी
हम थकें नहीं करते गुणगान ॥
ईश्वर का सच्चा घर है यह
भारत का कण-कण महान ।
सबसे अद्भुत, सबसे सुन्दर
सबसे प्यारा है हिन्दोस्तान ॥



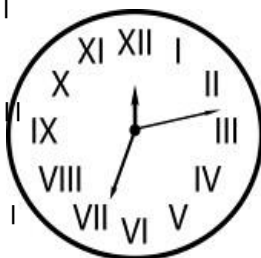
73. समय

सुन लो यह अनमोल वचन
समय का रखना सदा स्मरण ।

बंद मुट्ठी से रेत की तरह
होती है इसकी फिसलन ॥

जिसने समय की बर्बादी की
उसका भविष्य होता बर्बाद ।

जो समझे मोल समय का
उसकी किस्मत रहे आबाद ॥
एक-एक पल की कीमत है
समय है सबसे बढ़कर धन ।



सुन लो यह अनमोल वचन
समय का रखना सदा स्मरण ॥

दुनिया में छोटे और बड़े
सबको मिलते 24 घंटे समान ।

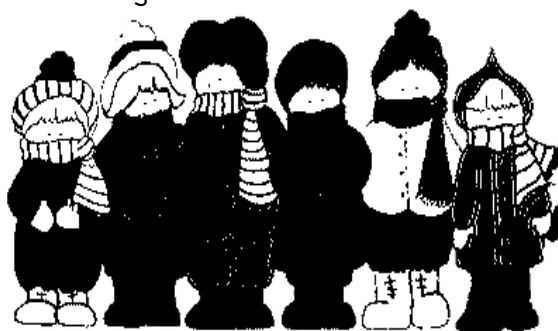
जो करते सदुपयोग इसका
उनका करता जग गुणगान ॥

महानता की सीढ़ी का पथ
तय करता समय प्रबंधन ।

सुन लो यह अनमोल वचन
समय का रखना सदा स्मरण ॥

74. सर्दी

फ्रीज, कूलर बंद पड़े हैं
सुस्त पड़ी कुल्फी, ठण्डाई
ठिठुरन होने लगी बदन में
सर्दी की ऋतु है आई ।
सूरज से सबने नाता जोड़ा
धूप गुनगुनी बहुत सुहाई
स्वेटर, मफलर सबने पहना
ओढ़ा कम्बल, शॉल, रजाई ।
घर-घर जलने लगे अलाव
सिगड़ी भी सबने सुलगाई
पंखों पर प्रतिबंध लगा
शरबत को आ रही रुलाई।
दिन का दायरा घटा
रातों की बढ़ी लम्बाई
ठिठुरन होने लगी बदन में
सर्दी की ऋतु है आई ॥



75. सलोने सपने

कितने अजब सलोने सपने
 आते हैं निंदिया में अपने ।
 पंछी बन आकाश में उड़ता
 परी लोक की सैर भी करता ॥
 धोनी के संग बैटिंग करता
 शाहरुख के संग एक्किंग करता
 मुम्बई जाता हीरो बनने ।
 कितने अजब सलोने सपने
 आते हैं निंदिया में अपने ॥
 विक्रम बेताल नींद में दिखते
 सीमा पर दुश्मन से लड़ते ।
 सानिया मेरे घर पर आए
 सब बच्चों को टेनिस सिखाए
 दुश्मन को हराया हमने ।
 कितने अजब सलोने सपने
 आते हैं निंदिया में अपने ॥



76. सावन

झिरमिर-झिरमिर गिरी फुहारें

कुदरत अपना रूप संवारे ।

बादल घुमड़-घुमड़ कर आए

सावन फिर से लौटा रे ॥

तीज-त्यौहार का मौसम आया

पेड़ों पर झूले संग लाया ।

गर्म पकौड़े और चाय का

खुमार है सब पर छाया ।

गीत बरखा के सुनाकर

सब मेघों को पुकारे ।

सावन फिर से लौटा रे ॥

छाई श्याम घटा घनघोर

बिजलियों का होता है शोर

टर्टर-टर्टर मेंढक टर्पाए

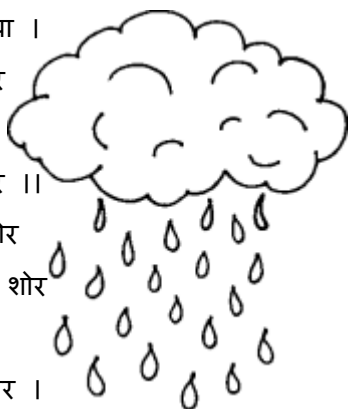
वन में नाच रहे हैं मोर ।

धरती की बगिया तर-तर भीगे

सुन्दर हो गए सारे नजारे ।

सावन फिर से लौटा रे

सावन फिर से लौटा रे ॥



77. सैनिक

ऐ सैनिक तेरा बड़ा उपकार है
 देश की सुरक्षा तेरा उपकार है ।
 मरते हैं दुनिया में और भी कई
 तेरी शहादत जीने का सार है ।
 मातृभूमि की रक्षा हेतु
 तुमने अपना खून दिया ।
 सीमाओं पर बम गोलों से
 दुश्मन दल को भून दिया ।
 भारत भूमि के कण-कण पर



भारतीयों का अधिकार है ।
 ऐ सैनिक तेरा बड़ा उपकार है
 देश की सुरक्षा तेरा उपकार है ।
 धन्य हो तुम वीर
 धन्य तुम्हारा है बलिदान ।
 तेरे आत्म-बलिदान का

ऋणी हुआ है हिन्दुस्तान ।
 सारे राष्ट्र की तुम संग
 आशाएं और प्यार है ।
 ऐ सैनिक तेरा बड़ा उपकार है
 देश की सुरक्षा तेरा उपकार है ॥

78. सैलानी

ऊँची-ऊँची हंसी वादियां
गहरी-गहरी हरी घाटियां ।
चुप रहकर भी कहती जाती
फिर आना हमारे दरमियां ।
मौन निमंत्रण मान भी जाना
सैलानी फिर लौट के आना ॥
उत्तर में हिमालय विस्तृत
दक्षिण में सागर लहराए ।
पूर्वांचल के हरे-भरे वन
और पश्चिम का थार बुलाए ।
सुन पुकार शीघ्र आ जाना
सैलानी फिर लौट के आना ॥
नदियों की कलकल गूंजी
मेघों ने भी तानें गाई ।
देश अनोखा है यह जिसमें
धरती भी माता कहलाई ।
तुम भी रिश्ता जोड़ के जाना
सैलानी फिर लौट के आना ॥



79. सोनू के विषय

सोनू से जब बोले पापा
 नम्बर हैं क्यों कम तुम्हारे ।
 बोला सोनू देखो पापा
 विषय ही हैं ऐसे हमारे ॥
 गणित से मेरा सिर चकराया
 विज्ञान कभी समझ नहीं आया ।
 सामाजिक विज्ञान अनोखा
 रटते-रटते धोखा खाया ॥
 हिन्दी, संस्कृत की कठिन व्याकरण
 अंग्रेजी से परेशान हुआ मन ।
 कैसे लाऊं ज्यादा नम्बर
 पढ़ने की नहीं मुझमें लगन ॥
 खेलूँ-कूदूँ दोस्तों के संग
 मन मेरा बस ये ही चाहे ।
 खिलाड़ी बनना है मुझको
 पढ़ना मेरे काम ना आए ॥
 इसलिए ही पापा मेरे
 नम्बर कभी ज्यादा ना आते ।
 काश होता खेलों पर विषय
 तब अव्वल आकर दिखाते ॥



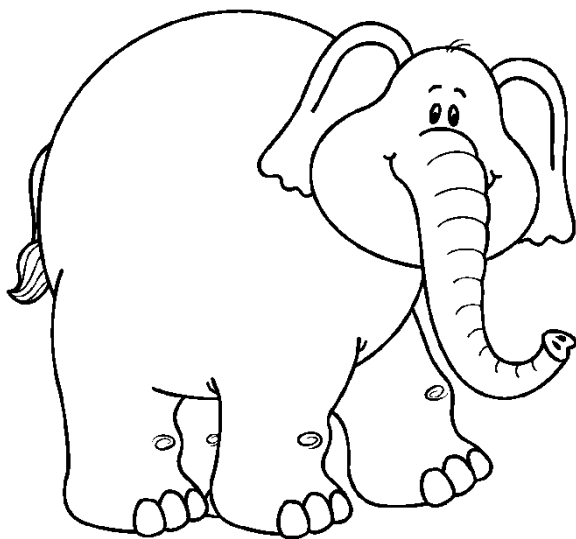


80. स्कूल-बस

सुबह-सुबह यह घर पर आए
फिर हमको स्कूल पहुंचाए ।
बच्चों की चहल-पहल रहती
स्कूल-बस सबको बहुत लुभाए ॥
स्कूल का इस पर नाम लिखा है
बच्चों की है पसंदीदा सवारी ।
सुबह-शाम बस में आते-जाते
करते मस्ती ढेर सारी ॥
माता-पिता भी आश्वस्त रहें
यह उनका विश्वास बढ़ाए ।
स्कूल हो चाहे जितना दूर
समय पर सबको यह पहुंचाए ॥

81. हाथी

हाथी दादा कितना प्यारा
 जंगल में सबसे है न्यारा ।
 पानी इसको खूब सुहाए
 झंड में भरकर रोज नहाए ।
 दांत है इसके लंबे, तीखे
 पूंछ है छोटी इसके पीछे ।
 धीमी-धीमी चाल मनुहारी
 झुंड में चलते बारी-बारी ।
 सवारी का मन करे हमारा
 हाथी दादा कितना प्यारा ॥





82 . होली का त्यौहार

होली का त्यौहार है आया
उड़ने लगा गुलाल और रंग ।
झूमे नाचे है जग सारा
बजने लगे ढोल और चंग ।
इन्द्रधनुषी रंगों जैसे
लगते हैं सबके चेहरे ।
होली के रंग में रंगे हैं सब
जात, धर्म के भेद से परे ।
नफ़रत मिट जाती दिलों से
बढ़ता है आपस में प्यार ।
पाप पर पुण्य विजय का प्रतीक
है यह होली का त्यौहार ॥

83. हँसते-हँसते दीप जले

क्रन्दन अन्धकार है करता
 हँसते-हँसते दीप जले ।
 दीपपर्व की पावन बेला पर
 हर आँगन खुशियां पले ।
 बम, पटाखे और फूलझड़ी
 बच्चों की है मौज़ बनी ।
 अमावस की कालिमा से
 लड़ने नन्हे दीपों की फ़ौज बनी ।
 मां लक्ष्मी से सब करें प्रार्थना
 हर दुःख अब सुख में बदले ।
 दीपपर्व की पावन बेला पर
 हर आँगन खुशियां पले ।
 नए-नए कपड़े सब पहने
 बनाएँ मीठे-मीठे पकवान ।
 सजावट और रोशनी से
 दुल्हन-सा हर सज़ा मकान ।
 राम-राज्य अब आ ही जाए
 प्रगति पथ पर देश चले ।
 दीपपर्व की पावन बेला पर
 हर आँगन खुशियां पले ॥





84. हंसना सीखो

हा हा हा हा हंसना सीखो
मुस्कानों में जीना सीखो ।
रоне को उम्र लंबी बहुत है
हंसकर आंसु पीना सीखो ॥
बच्चों की मासूम हंसी में
सृष्टि खिल उठती सारी ।
दूध से उजले दांत दिखे जब
रोशन हो रात अंधियारी ॥
कहीं ठहाके, कहीं मंद-मंद है
हंसी के कितने रूप अनोखे ।
हंसने की घड़ी न देखो
न ढूँढो हंसने के मौके ॥
जनवरी से लेकर दिसम्बर
हर महीना खुशी से जीना सीखो ।
हा हा हा हा हंसना सीखो
मुस्कानों में जीना सीखो ॥